नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

प्रौद्योगिकी से ही होगा हिंदी का विकास - प्रभास कुमार झा

हिंदी विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी का उदघाटन

तीन दिवसीय संगोष्ठी का केंद्रीय राजभाषा सचिव ने किया उदघाटन

देशभर के राजभाषा अधिकारियों की उपस्थिति

वर्धा, 19 मार्च 2017: हिंदी को बाजार, व्यवसाय एवं रोज़गार की भाषा बनाने के लिए नई-नई प्रौद्योगिकी का सहारा लेना चाहिए। हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने के लिए पौद्योगिकी का अधिक से अधिक दोहन कर उसे विश्व पटल पर ले जाना आवश्यक है। उक्त विचार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव प्रभास कुमार झा ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय (19 से 21 मार्च) अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी के रविवार को उदघाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, राजभाषा अधिकारी राजेश कुमार यादव मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र ने किया तथा आभार राजेश यादव ने माना। संगोष्ठी का उदघाटन अतिथियों की ओर से दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया।

प्रभास कुमार झा ने हिंदी के विकास को लेकर विश्वविद्यालय के की ओर से प्रौद्योगिकी के उपयोग की सराहना की और कहा कि हिंदी का सही मायनों में विकास करना है तो उसे प्रौद्योगिकी से जोड़ना होगा। विभिन्न प्रकार के एप्स, सॉफ्टवेअर और कार्यक्रम तैयार कर उसे मोबाईल और इंटरनेट के माध्यम से लोगों के उपयोग की भाषा बनाना होगा। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों के प्रति प्रसंन्नता जाहीर करते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय में हिंदी को आगे ले जाने के काफी प्रयास किए हैं। समर्पण और निष्ठा से यहां के अध्यापक, अधिकारी और विद्यार्थी ऐसी अनेक योजनाओं पर काम कर रहे है जो वास्तविक रूप से हिंदी को रोज़गार, बाजार और व्यवसाय की भाषा बनाने में सहायक हो। उन्होंने माना कि यदि ऐसे कामों को हम देशव्यापी कर दे तो हिंदी को विश्वपटल पर पहुंचने के लिए कोई बाधा नहीं पहुंचेगी। उन्होंने भारत सरकार द्वारा जारी भीम एप्स और अन्य ऑपरेटिंग प्रणालियों का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान और तकनीक से हिंदी को आगे बढ़ाया जाना आवश्यक है। राजभाषा विभाग की ओर से किए जाने वाले प्रयासों की जानकारी भी झा ने अपने वक्तव्य में दी।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि हिंदी एक महासागर है और अन्य भारतीय भाषाएं नदियों के समान है। हमें सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर हिंदी का विकास करना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते

हुए कहा कि यहां प्रत्येक विद्यार्थी को एक भारतीय या विदेशी भाषा सीखना अनिवार्य है। इस प्रयोग में हम काफी सफल हुए हैं। हम अन्य भाषाओं में पूर्व में हुए या हो रहे मौलिक कार्यों को हिंदी में लाने की बृहद योजना बना रहे हैं जिससे हिंदी ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से और समृद्ध हो सके। इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा हिंदी को आगे बढ़ाने में महाराष्ट्र के साथ-साथ दक्षिण भारत में हुए प्रयासों का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा हिंदी सर्वमान्य भाषा है जिसे नये उपकरणों के साथ लोगों तक पहुंचाना आवश्यक प्रतित होता है।

समारोह में कुलपति प्रो. मिश्र ने राजभाषा सचिव प्रभास कुमार झा का शॉल, चरखा और नारियल प्रदान कर सम्मान किया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक एवं मुख्य अतिथि का परिचय कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने कराया। कार्यक्रम में देशभर से आए राजभाषा अधिकारी, विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्यापीठों के संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

ज्ञान शांति मैत्री
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी
स्थान : ग़ालिब सभागार
दिनांक : 19-20-21 मार्च, 2017

अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी
स्थान : ग़ालिब सभागार
दिनांक : 19-20-21 मार्च, 2017

ज्ञान शांति मैत्री
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी
स्थान : ग़ालिब सभागार
दिनांक : 19-20-21 मार्च, 2017